शोध, भाषा और साहित्य की वार्षिकी

ISSN : 2321-9882 AAROH

आरोह

वर्ष 2013

Scanned by CamScanner

विजय बहादुर सिंह
नन्दकिशोर आचार्य
महेन्द्र नारायण कर्ण
कर्मेन्दु शिशिर
डॉ. श्रीभगवान सिंह
रवि रंजन
सदानन्द शाही
अरुण होता
राजश्री शुक्ला
डॉ. विनोद कुमार मिश्र
डॉ. राम विनय शर्मा
कृष्णमोहन झा
बजरंग बिहारी तिवारी
मनीषा झा
प्रभात कुमार मिश्र
आकाश वर्मा
शीतांशु
अविनाश कुमार सिंह
अमिष वर्मा
अंजु लता
निशांत
आशुतोष
मनीष कुमार द्विवेदी
नागेश्वर यादव
एल. डिम्पल देवी
डॉ. कमलेश वर्मा
डॉ. राजीव कुमार वर्मा
बिन्द कुमार चौहान
राजेन सिंह चौहान
अभिजीत सिंह

हिन्दी विभाग, असम विश्वविद्यालय, सिलचर

Scanned by CamScanner

आरोह : 2013
अंक : 1 ◻ वर्ष : 1

ISSN 2321-9882

© सर्वाधिकार सुरक्षित

संपादक : **कृष्णमोहन झा**

मूल्य : 100.00 रुपए

प्रकाशक

संयोजक, विशेष सहायता योजना (SAP)
हिन्दी विभाग, असम विश्वविद्यालय, सिलचर
सिलचर-788011 (असम)
फ़ोन : 03842-270842, मोबाइल : 09435073896
ई-मेल : krishnaamjha@gmail.com
वेबसाइट : www.aus.ac.in

आवरण चित्र : कृष्णमोहन झा

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

आरोह से संबंधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र सिलचर होगा।
प्रकाशित रचनाओं के विचार से 'आरोह' का सहमत होना आवश्यक नहीं।

AAROH (Anual Journal) Edited by Krishna Mohan Jha
Published by Coordinator, SAP, Department of Hindi, Assam University, Silcher-788001 (Assam) India
Price : Rs. 100/-

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

संपादकीय 5

विशेष : रामविलास शर्मा

रामविलास शर्मा : हिन्दी अस्मिता के उद्‌गाता / **डॉ. श्रीभगवान सिंह** 7

मध्ययुगीन कविता : प्रगतिशील प्रतिमानों के संदर्भ में / **अरुण होता** 17

रामविलास शर्मा : साहित्यिक सांस्कृतिक अस्मिता की पहचान / **राजश्री शुक्ला** 22

1857 और डॉ. रामविलास शर्मा / **डॉ. विनोद कुमार मिश्र** 29

हिंदी जाति का अस्मितामूलक विमर्श / **मनीषा झा** 34

'परंपरा का मूल्यांकन' और रामविलास शर्मा / **आकाश वर्मा** 37

एडवर्ड सईद के मार्क्स और रामविलास शर्मा / **शीतांशु** 44

...आलोचना आवश्यक है / **अविनाश कुमार सिंह** 49

रामविलास शर्मा की व्यावहारिक आलोचना / **नागेश्वर यादव** 59

पत्रों के आईने में / **एल. डिम्पल देवी** 63

अभिमत

कलाओं का अंतस्संबंध / **नन्दकिशोर आचार्य** 66

लोकतंत्र : एक मीमांसा / **महेन्द्र नारायण कर्ण** 70

आलोचना का संकट / **कृष्णमोहन झा** 76

प्राच्यवाद और इतिहास लेखन / **प्रभात कुमार मिश्र** 83

जाति का प्रश्न

जाति जुलाहा मति का धीर / **सदानन्द शाही** 94

प्रेमचंद के किसान, पिछड़ी जातियाँ और भारतीय संस्कृति / **डॉ. कमलेश वर्मा** 99

दलित, मुक्ति-संघर्ष और प्रेमचंद / **डॉ. राजीव कुमार वर्मा** 107

Scanned by CamScanner

भारतीय साहित्य 121
भारतीयता का प्रश्न / **विजय बहादुर सिंह** 126
भारतीय नवजागरण के जनक : राजा राममोहन राय / **कर्मेन्दु शिशिर** 132
वैश्वीकरण और समकालीन संस्कृत कविता / **बजरंग बिहारी तिवारी** 137
उपन्यास का भारतीय परिप्रेक्ष्य : नामवर सिंह के 'कुछ विचार' / **अमिष वर्मा** 140
साठोत्तरी हिंदी कविता में जीवानानंद दास का अभिग्रहण : द्वंद्व और स्वीकार / **निशांत** 153
उत्तररामचरितम् : राम की सीता कथा / **आशुतोष** 161
मीर की शायरी और इश्क़ की रिवायत / **मनीष कुमार द्विवेदी** 166
भारतीयता का पारंपरिक बोध और त्रिलोचन की कविता / **बिन्द कुमार चौहान** 170
असमिया के युग पुरुष डॉ. वाणिकांत काकति / **राजेन सिंह चौहान**

कथा-साहित्य 173
दीवार में एक खिड़की रहती थी : एक पुनर्मूल्यांकन / **रवि रंजन** 181
सांप्रदायिकता और राजनीति / **डॉ. राम विनय शर्मा** 186
हिंदी कहानी का विकास और सामाजिक परिवर्तन / **अंजु लता** 191
सत्ता और शिक्षा-व्यवस्था से लोहा लेते युवा की दास्तान / **अभिजीत सिंह**

आरोह का अगला अंक
समकालीन हिन्दी उपन्यास पर केंद्रित
संबंधित विषय पर आलेख जून, 2014 तक आमंत्रित हैं

Scanned by CamScanner

हिंदी कहानी का विकास और सामाजिक परिवर्तन

अंजु लता

भारतीय समाज में कहानी मौखिक परंपरा में एक लंबे समय से मौजूद रही है। सभ्यता के विकास का वह समय, जब जन इतिहास को दर्ज करने की कोई वैज्ञानिक पद्धति विकसित नहीं हो पाई थी तो मनुष्य अपने अतीत को कहानियों के माध्यम से वाचिक परंपरा में जीवित रखने की कोशिश करता था। हमारे समाज में प्राचीन काल से ही कहानियों को कहने की परंपरा रही है। बचपन से लेकर बड़े होने तक हम कहानियों के संपर्क में रहते हैं। कहानी कहने की परंपरा में एक तरफ कथा वाचक होता है और दूसरी तरफ श्रोता। कालांतर में जब कहानी ने इतिहास के तत्वों को अपने में समाहित करने की कोशिश की तब इसे आख्यायिका की संज्ञा दी गई। आख्यायिका में उपरोक्त दोनों पक्षों का होना आवश्यक है। इस क्रम में एक के मुख से दूसरे और दूसरे के मुख से तीसरे तक कथा के माध्यम से इतिहास का संरचरण होता रहता है।

कालांतर में वैज्ञानिक तकनीक के विकास के फलस्वरूप जब छापेखाने का विकास हुआ वाचिक परंपरा में विकसित तत्वों को छपने-छापने का मौका प्राप्त हुआ। इस क्रम में कथा ही नहीं वरन् साहित्य की अन्य विधाओं का भी विकास हुआ और समाज में कथा वाचक और श्रोता कम होने लगे। कहानी लिखित रूप में पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से आने लगी। और कहानी लिखने और पढ़ने वाले समाज का अंग बन गए। इस सदंर्भ में गोपाल राय कहते हैं कि—''उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्ष में 'सरस्वती' के प्रकाशनारंभ (1900) के साथ उसके संपादकों ने लघु आकारी कथाओं के प्रकाशन की आवश्यकता महसूस की। यह पत्रिका की आंतरिक आवश्यकता भी हो सकती है और अंग्रेजी में लोकप्रिय हो चुकी शार्ट-स्टोरी का प्रभाव भी। सरस्वती के पहले ही अंक में प्रकाशित किशोरीलाल गोस्वामी की जिस रचना (इंदुमती) को 1928-29 में शुक्ल जी ने और अन्य आलोचकों ने भी कहानी कहा, उसे स्वयं गोस्वामी जी ने आख्यायिका कहा था।'' (हिंदी कहानी का इतिहास, पृ. 17)

इस प्रकार कहानी विधा के अस्तित्व में आने के साथ ही उसके नाम को लेकर

Scanned by CamScanner